Vol 4 Issue 7 Aug 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-7 | Aug-2014
Available online at www.isrj.net

गॉधीवादी विचारधारा और साहित्य

सुनिता क्षीरसागर

असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

सारांश :- साहित्य अपने देश व काल का आइना होता है । देश के साहित्यकारों ने भारतीय काव्य का पालन करते हुए साहित्य का प्रयोजन लोकहित माना । भक्तिकाल में कबीर के साहित्य ने चहुमुँखी दलदल में फॅसे भारतीयों के लिए मशाल का काम किया । तुलसीदास ने सुरसरि के समान सबके लिए हितकर साहित्य का सृजन किया । मनु ने व्यक्ति में दस गुणों का होना आवश्यक माना था । कबीर ने इन्हीं गुणों का प्रचार और प्रसार भी किया था ।

प्रस्तावना :–

शिसाइ सेती सॉच चलि औरा सूँ सुध माइ ।
सेवग सो जो लागै सेवा, तिनही, पाया निरंजन देवा ।

मानव – जीवन का लक्ष्य ही पर–सेवा परोपकार है । गॉधीजी ने भी सच्चरित्र के लिए उपरलिखित गुणों को आवश्यक माना था । सद्गुणों से ही मनुष्य में सद्व्यवहार और नैतिकता आती है ।

संत कबीर व महात्मा गॉधी दोनों अलग युगों में हुए । दोनों के जन्म में लगभग चार सौ वर्षो का अन्तर होगा । दोनों ने अपने–अपने ढंग से समाज सुधारने की भरपूर चेष्टा की । दोनों का समाज–सुधार का तरीका भिन्न–भिन्न था । परन्तु दोनों ने ही मनुष्य के लिए सत्कार्य, सच्चरित्र और आत्मबल को अत्यन्त आवश्यक माना । दोनों ने मानव को मानव समझा । उॅच–नीच, सामाजिक, आर्थिक आडम्बर, छुआछूत आदि का दोनों ने विरोध किया, दोनों मानववादी थे ।

आधुनिक काल में भारतेन्दु और द्विवेदी युग की कविताओं में 'जीवन की जय' के गीत गाये गये । मैथलीशरण गुप्त और माखनलाल चतुर्वेदी ने भाषा पर अपनी पकड मजबूत होते ही जीवन की जय के गीतों का गान किया । गुप्तजी के 'भारत भारती' ने पाठकों में तहलका मना दिया। उस पुस्तक को पढकर महात्मा गॉधी ने उन्हें राष्ट्रकवि कवि उपाधि से विभूषित किया । माखनलाल चतुर्वेदी ने तो अपनी कविताओं से जीवन की आराधना करने की कसम खा ली । महात्मा गॉध के सिध्दान्तों के प्रति आस्थावान माखनलालजी ने उत्सर्ग और बलिदान की कविताओं की झडी लगा दी।

देश के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पलायनवादी कवि भले ही कल्पना लोक में अपनी अभिव्यक्ति क्षमता का सार्थक करते रहे परन्तु दिनकर जैसे कवियों ने स्वयं को समूची भारतीय मानवता के साथ पाया। उन्हीं के शब्दों में, '' मैं अपने समय की धडकन सुनने को जब भी देश के हदय में कान लगाता, मेरे कान में किसी बग के धडाके की आवाज आती, फॉसी पर झूलनेवाले किसी नौजवान की पुकार, दर्द–भरी आवाज सुनायी देती जो गॉधी के हदय मे ल रही थी, जिनसे बढकर मैं और किसी को श्रध्देय नहीं समझता था ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के साहित्यकारों में दिनकर ने दिल्ली के इठलाने पर व्यंग्ज करते हुए बात को रेखांकित किया, ''भारत की राजधानी में भले ही ज्योति की चहल–पहल हो सारा देश अंधेरे में भटका रहा है ।''

नागार्जुन ने अनुभव किया कि उनके सपने को साकार करनेवाली स्वतंत्रता का आगमन अभी शेष है समाज की विषमता ज्यों की त्यों है, क्योंकी कुछ मुट्ठी भर लोगों ने सारी सुविधाएँ हथिया ली है । रक्षक खुले आम भक्षक की भूमिका निभा रहे है ।

गजानन माधव ने आधुनिक बोध के बारे में विचार किया कि, ''अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द करना आधुनिक भावबोध के अन्तर्गत आता है । मुक्तिबोध ने इस बात का उल्लेख किया कि जब 'बंगाल में अकाल पडा था तो महादेवी से लेकर बच्चन, मैथलीशरण गुप्त, स्वयं मुक्तिबोध ने भी कविताएँ लिखी थीं, श्रेष्ठ कविताओं के संकलन की विक्री से धन–संग्रह हुआ । उसे अकाल फंड में डाला गया । अर्थात् साहित्य का प्रयोजन इन्सानियत की हिफाजत और उत्पीडित इन्सान की मुक्ति का रास्ता तलाश करना है । महात्मा गॉधी एक चिन्तक व पिवारक ही नहीं थे, एक साहित्यकार भी थे और अपने साहित्य द्वारा जीवन में

प्रयोग करते रहते थे । विष्णु प्रभाकर भी गॉधी के विचार से सहमत थे उनके मन की अतल गहराइयों की सफल अभिव्यक्ति है उनकी पुस्तक 'आवारा मसीहा' ।

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता निर्मल वर्मा कहते हैं कि – 'जो एक महान लेखक हर युग में करता आया है कि उसे जो दिखायी देता है, उसकी लिपी में वह पढा लेता है जो सिर्फ अदृश्य है । इसी अदृश्य को पढने की ऑख एक लेखक को दृष्ट बनाती है । अदृश्य को पढने की ऑख जिस साहित्यकार के पास होती है, वही युगदृष्टा होता है। उसी का लिखा साहित्य पाठकों को अधिक समझदार बनाता है ।

महात्मा गॉधी के अतिरिक्त किसी व्यक्ति ने अपनी आत्मकथा को – 'सत्य के प्रयोग' नहीं कहा है । विश्व इतिहास में महात्मा गॉधी एकमात्र ऐसी नेता हुए जिन्होने जीवन की हर चुनौती का सामना किया तथा हर संकट का समाधान ढूँढने की कोशिश की। गॉधीजी का संघर्ष सर्वागीण, सार्वदेशिक, सार्वकालिक और जीवमात्र के हित का साधन करनेवाला था। गॉधीवाद के मूल स्तम्भ दो है, सत्य और अहिंसा । सत्य का ही दूसरा नाम उन्होंने 'परमेश्वर' माना है ।

गॉधीजी के विचारों को अपने काव्य द्वारा प्रस्तुत करते हुए कवियों ने बताया है, ''तुम बोल उठे युग बोल उठा तुम मौन बने, युग मौन बना।''

अर्थात गॉधीजी के एक चरण को उठाने से कोटी–कोटी चरणों का प्रयाण होता है ।

''सतयुग बीता, त्रेता बीता,
यश–सुरभि राम की फैलता ।''

गॉधी का युग–सम्बध व्यक्तित्व वस्तुत युगान्तरकारी है । कवियों ने (सुभद्राकुमारी चौहान) इसं गॉधीयुग कहा हैं ।

''कौन तुम युग देवता साकार,
हो उठे सुनकर विकल भव का करूण चीत्कार ?''

अर्थात पीडित मानवता की चीत्कार सुनकर आत्मा का सृजन किया था गॉधीजी ने । गॉधीजी की पुण्यात्मा को श्रध्दा का अर्ध्य अर्पित करनेवाल कवियों में ठाकुर गोपालशरण सिंह 'नेपाली' उल्लेखनीय है। पंत ने गॉधी को मानवता का प्रतीक और उसका उध्दारक कहा है । अपने काव्यद्वारा गॉधी सत्य, अहिंसा का धनुसायक धारण किये हुए अभिनव राम है । कवि ने उन्हें अमृतपुत्र, युगात्मा भूस्वर्तदूत, युगनर आदि की उपाधियॉ दी हैं ।

भारतीय जनमानस ने उन्हें 'बापू' और राष्ट्रपिता के पद पर अभिषित्क कर अभूतपूर्व श्रध्दा अर्पित की । सियारामशरण गुप्त ने भी अपने काव्य द्वारा कीर्तिमान और पूर्ण विश्वमानव घोषित किया है – ''धन्य वह काल तीर्थ कालातील बोला जहॉ नारायण नर में ।'' दिनकर जी गॉधी को शान्ति का नहीं, बल्कि क्रान्ति का अग्रदूत मानते रहे है । उनके शब्दो में, ''गॉधी शरबर नहीं प्रखर पावक प्रवाह थे ।'' बापू के महाप्रयाण किया है । इसके अतिरिक्त पंत (खादी के फूल) बच्चन (सूत की माला) नरेन्द्र शर्मा, नवीन, अंचल इन्होंने भी ऐसी ही भक्तिभाव काव्य समर्पित किये हैं ।''

इस अवधि में अयुध्द की अथवा विश्व–शांति की जो आवाज उठायी गयी है जैसे नरेश मेहता कृत संशय की एक रात, में वहां गॉधी दर्शन विद्यमान है । नारी की प्रति जो समवेदना का स्वर मैथिलीशरण गुप्त से लेकर समसामयिक लेखन तक विद्यमान है उसकी पृष्ठभूमि में कहीं–न–कही गॉधीजी है । ग्रामोत्थान का जो आंदोलन प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में छेडा था, उसके नेपथ्य में गॉधीजी थे । वही अब आंचलिक कथा साहित्य, पर्यावरण संतुलन, गद्य निषेध, दुनियादी, शिक्षा, सादा जीवन, स्वदेशी आंदोलन, कुटीर उद्योग, कृषक संस्कृति और साहित्य अध्यात्मा के विभिन्न बिन्दु जो पिछले पॉच दशकों कि हिन्दी साहित्य में प्रस्फुटीत हुए है, उन सबके मूल में समर्थन अथवा वैमन्य के रूप में कही–न–कहीं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से गॉधीजी या 'गॉधीवादी की अन्तःप्रेरणा अवश्य रही है ।''

''चकित है दुःख', 'अंधेरी कविताऍ', 'गॉधी पंचशती', 'बुनी हुई रस्सी', 'खुशबू के शिलालेख', 'व्यक्तिगत अनाम', 'तुम', 'परिवर्तन जिये', 'त्रिकाल संध्या', 'नीली रेखा तक', ऐसे कई काव्य संग्रह भवानी प्रसाद मिश्र के प्रकाशित हुए इनमें गॉधी दर्शन की गहरी छाप है ।

हिन्दी साहित्यकारों ने गांधीजी की विचारधारा को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहजतः अथवा प्रतिक्रया प्रेरित होकर इतना अपनाया कि द्विवेदी युग और छायावाद युगीन अधिकांश लेखीन गॉधीमय हो गया ।

गॉधीवादी चेतना विचार का उपन्यास पर प्रखर प्रभाव देखा जाय तो सबसे पहले प्रेमचंद ही आते है । जिन्होंने अपने हर उपन्यास द्वारा समाज को गॉधीजी के विचारो से प्रेरित एवं सूचक बनाया है । प्रेमचंद जी भी गॉधीजी के विचारों से प्रभावित थे और वह प्रभाव उनके उपन्या समे दिखाता है । कृषी कुटीर उद्योग, समाज हित, सत्य वचन, अहिंसा, प्रेमपूर्वक वर्तन, यह सभी गुण प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास द्वारा समाज को दिखाए हैं । सत्य, प्रेम, अहिंसा जो गॉधीवादी चेतना के मूल मंत्र है । ठीक वैसे ही जैसे, 'सत्य, शिव एवं सुन्दर' का । जाति व्यवस्था को उन्होंने हिन्दू समाज के लिए कलंक कहा है । गॉधी ने युग की आवश्यकताओं को देखा और बुध्द एवं सुकरात की तरह सत्यों की जीवन में उतारने बात की ।

वैष्णव परिवार में पलनेवाले मोहनदास करमचंद गॉधी ने जैन धर्म के पॉच व्रत बताए हैं उनके साथ उन्होंने अपने और छ : गुण जोडे है। इस तरह 11 गुण हैं – 1. सत्य, 2. अहिंसा. 3. ब्रम्हचर्य. 4. अस्तेय. 5. अपरिग्रह. 6. अस्वाद. 7.अभय, 8. स्वदेश. 9. शारिरिक श्रम, 10. अस्पृश्यता निवारण. 11. सर्वधर्म समभाव । अहिंसा का साधारण अर्थ है, हिन्दी नहीं करना । हिन्दी का संबंध द्वेष, क्रोध, हत्या, ईर्ष्या, असूया, द्रोह, अमर्ष, क्रूरता चोरी आदि से है । अतः किसी भी जीव को किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना अहिंसा है ।

अतः हर साहित्य एवं साहित्यकार ने यही माना व लिखा जो गॉधीजी का विश्वास था कि अन्तिम अर्थ में ईश्वर अथवा सत्य ही अन्त्य तथा सर्व सामर्थ्यवान सत्ता है, गॉधीजी का सत्य एक ही है, वह है मानव को मानना । उसे किसी भी प्रकार के भेद से परे मानना । प्रत्येमानव का दूसरे के साथ प्रेम के बंधन में बंधकर रहना व नैतिकता का पालन करना ।

ग्रंथ सुचीः

1. भारतीय कला और सुची– भगवतशरण उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन 2002
2. साहित्य विधाओंकी प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी राजकमल प्रकाशन 1999
3. हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्श – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, अमन प्रकाशन रामबाग 2000
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर – डॉ. नीरज जैन, निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली, 2001
5. समाज दर्शन – हदय नारायण मिश्र, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद 1989
6. मूल्य परक शिक्षा और समाज – नत्थूलाल गुप्ता, नमन प्रकाशन, दिल्ली 2000

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net